रात्रीक्लास ओमशांति 24.10.67
बच्चों की दिल होगी हम जल्दी जाय पहुंचें। घर कब पहुंचना है। तुम बच्चों को भी जरूर होता होगा। सुखधाम जाय पहुंचें तो सब दुःखों से दूर हो जायें। वहां कायदे कोई काम नहीं होगा। यहां हर चीज के लिए मेहनत करनी पड़ती है। वहां मेहनत नहीं। यहां तूफान .....आदि होने से चीज खराब हो जाती है। वहां यह बात नहीं। नाम ही सुखधाम। बाप तसल्ली देते हैं धीर्य धरो। बाकी थोड़ा टाइम है। तीर्थ यात्रा पर थक जाते हैं तो पण्डा आथत देते हैं। मीठे2 बच्चों की यह मुसाफिरी है इस पार से उस पार जाने की। समझ में आता है पुरानी दुनियां से नई दुनियां तरफ जा रहे हैं। सिर्फ पुरुषार्थ करना है उंच पद पाने। इसके लिए है याद की यात्रा। जो बाप कहते हैं मैं आय सिखलाता हूं। और कोई सिखलाय न सके। इस यात्रा से पतित दुनियां पावन बन जाती है। तुम्हारी बुद्धि में है एक बाप ही स्वर्ग की सीापना करते हैं। तुम बाप और चक्र को जान गए हो। तसल्ली होती है। दुनियां में और कोई नहीं समझते। विरला समझते हैं और कशिश होती है बाप पास आने की। जितना2 याद करेंगे उतना पवित्र बन जावेंगे और शिवबाबा की कशिश होगी। इनके लिए कशिश नहीं होती। कशिश होनी है शिवबाबा की। यह है नई इन्वेंशन। रचता की निकालेंगे ना। पुरानी दुनियां को बदल नया बनाना है। लायक बनना है निर्वाणधाम सुखधाम जाने लिए। यथार्थ रीति से समझना है। यह दंत कथा नहीं है। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो बेहद के बाप से बेहद के सुख का वर्सा लेने। बाप को याद करने से ही पावन बनेंगे। तुमने ही कल्प2 बेहद के बाप से सुख का वर्सा पाया है। तुम जानते हो इतने जन्म सुख, इतने जन्म दुःख भोगा है। बाप ने स्मृति दिलाई है। इस स्मृति में रहना होता है। जब तक वह समय विनाश का आ जाये। सभी मनुष्य कहते हैं भावी प्रबल है। तुम जानते हो क्या होने का है। तुम भी कब2 ड्रामा को भूल जाते हो। चिंतन करते हो। किसका जास्ती ,किसका कम चिंतन चलता है। देखा जाता है चिंतन बिल्कुल ही बंद हो जाये। कोई भी फिकरात न हो, यह होता नहीं है। फिक्र से फारिग होंगे ;परंतु अंत में। इस समय हो न सके। विवेक कहने न देंगे। बाकी यह जरूर है बच्चे पढ़ते हैं पढ़ाई पर निश्चय हो बाप पढ़ाय रहे हैं तो यह याद स्थाई रहे तो खुशी का पारा भी चढ़े। नीचे–उपर होते ही हैं। इसमें कोई बात में मूंझने की दरकार नहीं। तुम सब हो पेशेंट एक डॉक्टर के। पेशेंट को भी कोई भी बीमारी होगी तो याद पड़ेगा फेमिली सर्जन। यह है ईश्वरीय फेमिली। ईश्वर है अविनाशी सर्जन। जिस्मानी बीमारी की बात नहीं। बाप तो एक ही दवाई देंगे याद की यात्रा में रहो। करके संदेशी को बाबा पास भेजा जाता है। ड्रामा में जो है वह होता है। दवाई लगे न लगे कुछ कह नहीं सकते। बच्चों को एमऑब्जेक्ट तो दे दी है। यह बनना है। दैवी गुण धारण करना है। कोई को दुःख न देना है। न अपन को दुःख में लाना है। याद है ही सेफ्टी फर्स्ट। याद और पवित्रता। दो है मुख्य। जितना याद करेंगे और दूसरों को रास्ता बतावेंगे पद पावेंगे। पदमापदम भाग्यशाली तुम हो ना। आगे चल जितना प्रभाव पड़ता जावेगा बहुत आवेंगे। हार्टफेल न होना है। बाप वंडरफुल नालेज देते हैं तो तुम क्या बन जाते हो। कितना वंडरफुल वर्सा मिलता है। अथाह सुख बाप से मिलती है। बच्चे समझते हैं कि बाप से ऐसा वर्सा मिलता है जो अनगिनत धन हो जाता है। गिनती की बात नहीं। बाकी थोड़े रोज हैं। राज्य मिला कि मिला। आत्मा ही शरीर के साथ क्या2 बनता है। ऐसा कोई थोड़े ही समझेंगे मैं आत्मा यह बनता हूं। मैं आत्मा इस शरीर द्वारा बाप से पढ़ रहा हूं। घड़ी2 अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसमें मेहनत है। अभी तुम डबल युद्ध पर हो। योद्धा तो हो ना। वॉरियर्स हो। तुम डबल अहिंसक हो। बच्चों को सा. भी कराया है कैसे तुम्हारी रक्षा होती है। अगर शिवबाबा की याद में रहते हो। याद की यात्रा ही काम आती है। याद है मुख्य। सारे ज्ञान का सार है मनमनाभव। भल बात कि याद को भूलो मत। यहां पर आकर बैठते हो तो बाप की डायरैक्शन अमल में लानी है। इसमें माया की युद्ध चलती है। कड़े2 तूफान आवेंगे। जितना रुस्तम बनेंगे उतना माया के तूफान आवेंगे। बाबा ने बार2 समझाया है पहले2 तुम्हारी जीत होनी है गीता का भगवान

कौन?फिर आरग्यू कर न सकेंगे। बाप है ही सत्य। हमको जो समझाया है चित्र निकलवाया है। सब राइट्स हैं। इसमें मूंझने की दरकार नहीं। तुमको कहते हैं इनको ब्रह्मा क्यों कहते हो?अरे ,हम ब्रह्माकुमारियां आपके सामने खड़े हैं, हमारा वह बाबा है। हम उनके बच्चे हैं। तुम्हारे कहने से क्या होगा?ढेर बच्चे हैं। तुमको खुश करने लिए क्या निकाल देवें?ब्रह्माकुमारियां कहां से निकलीं?तुम सभी ब्रह्मा के बच्चे हो। समझ कर और फिर बनते जाते हैं। बनते भी हैं शिवबाबा की। शिवबाबा इन द्वारा शिक्षा देते हैं।.....विवेक कहते हैं याद की यात्रा में रहने से आयु बढ़ती जरूर है। अगर मर पड़ते हैं तो जरूर याद की यात्रा कम है। जिस कारण आयु बढ़ाय न सकता। तुमको ध्यान रहता है मामा पर। सरस्वती और तुम्हारे में क्या फर्क है?यह तो सिर्फ निमित्त बनाया जाता है। बच्चों का काम है याद में रहना है। और कोई संशय में जाना नुकसानकारी है। घटके में रहने से कम पद पावेंगे। जो होगा ड्रामा अनुसार। मूंझने की दरकार ही नहीं। भावी प्रबल है। भावी ड्रामा को कहा जाता है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट। रही हुई प्वाइंट्स– गीता का भगवान कौन?समझानी तो बहुत ईजी है। गीता तो भगवान ने सुनाई और राजाओं का राजा बनाया था। फिर जब वह आवे तब ही बनावेगा। बाकी यह सब बैठ सुनते हैं। सत्यनारायण की कथा करते हैं ना। उनसे कुछ होता नहीं है। अमरनाथ्ज्ञ ने तो अमरकथा सुनाई थी। तब अमरपुरी के मालिक बने थे। बाकी यह कथायें आदि पढ़ने, सुनने से कुछ मिलता थोड़े ही है। अभी तुम समझते हो हम कितने बेसमझ थे। तुम बच्चों को सदैव खुश हर्षितमुखरहना है। तुम बहुत स्वीट चिल्ड्रेन्स हो। बाप 5000वर्ष बाद ही आय बच्चों से मिलते हैं। तो जरूर खुशी होगी ना। हम फिर से आये हैं बच्चों से मिलने। हर एक अपने अंदर में .....फलाने को मार डाला। यह भूल हुई। बाप समझाते हैं जितना हो सके कन्ट्रोल करो। जंगली मनुष्य हैं। अबलाओं पर कितनी अत्याचार होती है। स्त्री अबला होती है। बाप फिर तुमको यह गुप्त लड़ाई सिखलाते हैं। जिससे तुम रावण पर जीत पहनते हो। यह लड़ाई कोई की बुद्धि में नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो समझते हैं। यह है बिल्कुल नई बात। और तो सभी आधार है शास्त्रों पर। बाप कहते हैं यह जो सभी कर्मकांड हैं, सब हैं भक्तिमार्ग। अभी तुमको यह मालूम पड़ता है कि भक्तिमार्ग कब शुरू होता है, कब पूरा होता है। अब फिर ज्ञान मार्ग चलना है। हम अपने घर जावेंगे। फिर आकर नई दुनियां में बेहद का वर्सा पावेंगे। अभी हम पढ़ रहे हैं सुखधाम के लिए। यह भी अभी ही याद है। फिर हम भूल जावेंगे। मूल बात है ही याद की यात्रा की। याद से पावन बन जावेंगे। प्रदर्शनी में तुम समझाते हो अगर निश्चय बुद्धि हो जाये तो फट से लिखो बाबा आप तो कल्प2 साधारण तन में आते हो। हम ब्रह्माकुमार बने....आप से वर्सा लेने। बाबा अभी हम आया कि आया। बच्चे .....नहीं हैं। अगर बाप को पहचानना है तो जो उंच ते उंच भगवान है उनके बनो ना, उनसे पढ़ो ना, उनको अपना गुरू बनाओ। नहीं तो गति सदगति कैसे होगी। शरीर छूट जाये तो दुर्गति को पावेंगे। समझानी ऐसी देनी चाहिए जो कपाट ही खुल जाये। तुम क्लीयर कर लिखते हो द्वापर से भक्ति अर्थात् दुर्गति मार्ग शुरू होता है। पहले2 होती है सतोप्रधान भक्ति। फिर व्यभिचारी भक्ति शुरू होती है। दुर्गति होती है, उतरती कला होती है। चढ़ती कला और उतरती कला का भी अर्थ चाहिए ना। चढ़ती कला करने वाला एक ही बाप है। उतरती कला में रावण ले जाते हैं। यह है ही रावणराज्य। अपन में जो अवगुण है वह भी निकालनी चाहिए। चार्ट में सब नोट करना चाहिए। बहुत हैं जो सच्च कब न लिखेंगे। समझेंगे बाबा क्या कहेंगे। मुरली में कहेंगे इसलिए लिखते ही नहीं। डायरी पाकेट में रखी रहे। फिर रात को बैठ सारा दिन का पोतामेल निकालना चाहिए। तब कुछ उन्नति हो सके। अच्छा, ओम।